Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

मीडिया में जायसी की पद्मावती के प्रस्तुतिकरण का विश्लेषण

अहमद अज़ीम
शोधार्थी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

Article Info
Volume 6, Issue 3
Page Number : 89-92

Publication Issue :
May-June-2023

Article History
Accepted : 01 June 2023
Published : 12 June 2023

सारांश : रानी पद्मावती/पद्मिनी और अलाउद्दीन खिलजी की कहानी को सैकड़ों वर्षों से नाटकों, फिल्मों एवं धारावाहिकों के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाता रहा है। महत्वपूर्ण है कि इनमें निर्देशकों ने न सिर्फ अपनी रचनात्मक स्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए कहानी में बदलाव किया बल्कि मुख्य पात्र पद्मावती, अलाउद्दीन खिलजी एवं रतनसेन को अलग-अलग प्रकार से दर्शाया लेकिन जिस प्रकार से संजय लीला भंसाली निर्देशित 'पद्मावत' पर उग्र विरोध-प्रदर्शन देखने को मिला वैसा कभी नहीं हुआ। जायसी के महाकाव्य पद्मावत के सिर्फ कुछ अंशों को आधार बनाकर भंसाली ने यह फिल्म बनायी और इसको इस तरह प्रचारित किया गया कि यह उसका रूपांतरण है। खिलजी को एक रूढ़िवादी दुष्ट मुस्लिम राजा के रूप में और रत्नसेन को धर्मी हिंदू राजा के रूप में चित्रित करने को भी नापसंद किया गया, जिसके कारण कुछ समुदायों ने विरोध किया। इस फिल्म को देखकर ऐसा लगता है कि यह जायसी की पद्मावत से प्रेरित होकर नहीं बल्कि अलाउद्दीन खिलजी की छवि को धूमिल करने की नीयत से बनायीं गयी है। जायसी की पद्मावत पर आधारित जो भी फिल्में अथवा धारावाहिक बनें उनमें यह प्रस्तुति मूल कहानी और ऐतिहासिकता से सबसे अधिक करीब नजर आती है।

मूल शब्द- जायसी, पद्मावत,पद्मावती, मीडिया, यथार्थ, उत्तर-सत्य.

मूल आलेख- भक्तिकाल में सूफी काव्यधारा के अंतर्गत मलिक मुहम्मद जायसी ऐसे कवियों में से हैं जिन्होंने तत्कालीन समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का समावेश अपनी काव्य रचना 'पद्मावत' में किया है। उन्होंने अपनी काव्य रचना के माध्यम से भारत की समन्वयकारी भावना को प्रस्तुत किया है। इसलिए अनेक विद्वानों ने जायसी को 'लोक का कवि' कहा है। जायसी से पहले या बाद मेंपद्मावतीअथवा पद्मिनी नाम के पात्रों का जिक्र लोक-कथाओं में होता रहा है। जायसी की पद्मावत से पहले लोक मेंपद्मावतीकी कथा मौजूद थी, लेकिन जायसी ने इस प्रेमाख्यान की मुख्य किरदारपद्मावतीकी कुछ ऐसी तस्वीर खींची कि वह अमर हो गयी। समय के साथ-साथ पद्मावत की यह नायिका भारत के विभिन्न हिस्सों में किस्से-कहानियों के माध्यम से आम जन-मानस में बस गयी। पद्मावत की कथा अन्य सूफ़ी प्रेमाख्यानक काव्यों की भांति पूरी तरह काल्पनिक न होकर कल्पना और इतिहास का अनूठा मिश्रण है। मसनवी शैली में लिखे गए पद्मावत का प्रारम्भ काल्पनिक कथा से हुआ है, लेकिन इसका अंत इतिहास पर आधारित है। भारतीय जन-मानस पर जायसी की इस रचना का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ है कि एक बड़ा वर्ग इस कहानी में कल्पना और इतिहास के बीच के अंतर को पहचान भी नहीं पाता। राजस्थान से शुरू होकरपद्मावतीकी कहानी उत्तर भारत, बंगाल और सुदूर दक्षिण तक में लोकप्रिय हो गयी। जायसी ने पद्मावत के ज़रिये मुख्यत: दार्शनिक सन्देश देने की कोशिश की है, लेकिन क्योंकि यह एक प्रेमगाथा है,

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

इसलिए साधारण जन के लिए पद्मावत का मतलब,पद्मावतीऔर रतनसेन के प्रेम की कहानी है और अलाउद्दीन खिलजी उसमें एक खलनायक है।

सैकड़ों सालों सेपद्मावतीकी कहानी तकरीबन हर माध्यम के द्वारा कही जा रही है। जैसे–जैसे संचार माध्यम विकसित होते गए,पद्मावतीकी कहानी उस माध्यम के ज़रिये कही गयी। चाहे वह लोक–कथा का माध्यम हो, नाटक हो, ओपेरा हो, ऑडियो डाक्यूमेंट्री हो, वीडियो डाक्यूमेंट्री हो, डॉक्युड्रामा हो, फिल्म हो या कुछ और सभी में अपने–अपने तरीके सेपद्मावतीकी कहानी को बताया गया है।पद्मावतीको लेकर अब तक अलग–अलग भारतीय भाषाओं में कई फ़िल्मों का निर्माण हो चुका है।दूरदर्शन ने 'फोर्ट्स ऑफ़ इंडिया' नाम से एक डॉक्यूमेंट्री श्रृंखला का प्रसारण 2010 में किया। इस श्रृंखला की एक कड़ी में चितौड़गढ़ और उससे जुड़ी कहानियों का प्रदर्शन किया गया है। रानी पद्मिनी को हासिल करने के उद्देश्य से अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चितौड़गढ़ के किले पर आक्रमण को एक लोक कथा बताया गया। इसके सूत्रधार मशहूर शिक्षाविद एवं इतिहासकार डॉ. पुष्पेश पन्त थे। रानी पद्मावती की कहानी पर वैसे तो वर्षों से देश भर में कविताएं, कहानी, नाटक इत्यादि लिखे गए और उन पर मंचन भी होता रहा है परन्तु ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज़ ऑफ़ राजस्थान' के बाद रानी पद्मावती की आधुनिक कहानी कहने का सिलसिला शुरू हुआ। टॉड ने 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज़ ऑफ़ राजस्थान' को 1829–32 के बीच मुख्य रूप से चारण और भाट की मौखिक परंपराओं के आधार पर लिखा था जो राजपूतों के सैन्य और वीर चरित्र को ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में वर्णन करते हैं। बंगाली कवि सय्यद अलाउल ने अराकान प्रांत के मंत्री मगन ठाकुर के संरक्षण में मलिक मुहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत को आधार बना कर 1652 में एक लम्बी अनुवादित काव्य रचना की जिसका नाम था 'पद्मावती'। "अलाओल अथवा अलाउल सत्रहवीं शती में विद्यमान थे और इन्होंने हिंदी (अवधी) कवि मलिक मुहम्मद जाएसी कृत 'पद्मावत'को आधार बनाकर बंगला में 'पद्मावती' रचना लिखी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ में इनका उल्लेख 'आलो उजालो' नाम से किया है।"[1] अलाउल कृत 'पद्मावती'न केवल काव्यग्रंथ है बल्कि एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अनुलेख भी है।

पद्मावतीपर तीन मुख्य फिल्में बन चुकी हैं। ये फ़िल्में हैं– 1963 में तमिल भाषा में बनी फिल्म 'चितूर रानी पद्मिनी', 1964 में हिंदी भाषा में बनी फिल्म 'महारानी पद्मिनी' और संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म 'पद्मावत', जो रिलीज़ होने से पहले ही विवादों में घिर गयी। तमिल भाषा में बनी फिल्म 'चितूर रानी पद्मिनी' का निर्देशन चित्रापू नारायण मूर्ति ने किया था। फिल्म में दर्शाया गया है कि अलाउद्दीन खिलजी के सामने पेश होने के बजाए रानी पद्मिनी ने आत्महत्या कर ली थी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उस फिल्म में पद्मिनी का किरदार निभा रही वैजयंती माला पर कई गाने फिल्माए गए, लेकिन कभी इस फिल्म का कोई विरोध नहीं हुआ। यहाँ तक कि एक गाने में जब उसको अपने पिता के दरबार में नृत्य करते हुए दिखाया गया तो उस सभा में खिलजी का सेनापति मालिक काफूर भी मौजूद था।

सन 1964 में ही हिंदी भाषा मेंपद्मावतीपर पहली फिल्म बनी 'महारानी पद्मिनी'। इस फिल्म के निर्देशक थे– जसवंत झावेरी, जिन्होंने बाद में 'जय चित्तौड़' के नाम से भी एक फिल्म बनाई थी। 'महारानी पद्मिनी' फिल्म में अभिनेत्री अनीता गुहा ने रानी पद्मिनी का किरदार निभाया था। जायसी की पद्मावत की कहानी के विपरीत इस फिल्म के अंत में अलाउद्दीन खिलजी पद्मिनी को अपनी बहन मान लेता है और राजपूत राजा राणा भीमसिंह, खिलजी की बांहों में दम तोड़ते हुए दिखे हैं और खिलजी को अपने किए पर पछतावा करते हुए दिखाया गया है। इस फिल्म में महारानी पद्मिनी का एक अलग ही रूप में प्रस्तुत किया गया है। फ़िल्म के एक सीन में महारानी पद्मिनी सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की जान भी बचाती हैं। फिल्म में ये भी दिखाया गया है कि खिलजी के मन में पद्मिनी की सुंदरता के लिए दीवानगी उसके सेनापति मलिक काफूर ने पैदा की, जोकि जायसी की पद्मावत के बिलकुल विपरीत है। हालांकि फिल्म रानी पद्मिनी के जौहर पर खत्म होती है। इस फिल्म को लेकर कभी कोई

विरोध नहीं हुआ था।

वहीं वर्ष 1930 में बांग्ला भाषा में एक मूक फिल्म रिलीज़ हुई थी जिसका शीर्षक था- 'कामोनार अगुन (Flames of Flesh)'। इसे दिनेश रंजन दास और धीरेंद्रनाथ गांगुली ने निर्देशित किया था। यह फिल्म भी चित्तौड़ की महारानीपद्मावतीपर आधारित थी।

पद्मावत के कुछ खंड विशेषकर 'मानसरोदक खंड' का फिल्मांकन मणि कौल ने 1994 में बनी लघु फिल्म 'द क्लाउड डोर' में किया था। फिल्म बनाने के लिए कौल ने पद्मावत, भाष द्वारा लिखित संस्कृत नाटक 'अविमारका' और भारतीय कामुक कहानी संग्रह 'सुक्सापिती' को स्रोत के रूप में लिया था। जनवरी 1995 में सिर्फ एक बार इरोटिक टेल्स कार्यक्रम के तहत इस फिल्म को भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाया गया था। विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में यह फिल्म काफी सराही गयी। फिल्म को लेकर कई जगह विरोध-प्रदर्शन हुए थे परंतु इसका कारण फिल्म में दर्शायी गए कामुक दृश्य और नग्नता थी ना कि राजपूत अस्मिता को ठेस पहुँचाने के प्रसंग थे जैसा कि भंसाली द्वारा निर्देशित पद्मावत के साथ देखने को मिला।

संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म 'पद्मावती' विरोध के चलते अपने तय समय पर प्रदर्शित नहीं हो पाई। जयपुर में भंसाली पर राजपूत जाति से जुड़े संगठन करणी सेना ने हमला भी किया था। इसके बाद कोल्हापुर में फिल्म के सेट पर आग लगा दी गयी। विरोध करने वालों का आरोप था कि भंसाली ने ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया और फिल्म मेंपद्मावतीको घूमर नृत्य करते हुए दिखाया गया है। साथ ही फिल्म मेंपद्मावतीऔर अलाउद्दीन खिलजी का स्वप्न अनुक्रम है जिस पर लोगों की भावनाएं आहत हुई थी जिसके कारण भंसाली को फिल्म का नामपद्मावतीसे 'पद्मावत' करना पड़ा । इस मामले में राजनेताओं ने भी जम कर बयानबाजी की। संजय लीला भंसाली ने फ़िल्म को इतिहास से प्रेरित बताया था, और शायद यही मुख्य समस्या भी थी। रामचन्द्र शुक्ल पद्मावती के ऐतिहासिकता पर लिखते हैं- "पद्मावती क्या सचमुच सिंघल की थी? पद्मावती सिंघल द्वीप की हो ही नहीं सकती। यह 'सिंघल' नाम ठीक माने तो वह राजपूताने या गुजरात का कोई स्थान होगा। न सिंघलद्वीप चौहान आदि राजपूतों की बस्ती का कोई पता है, न इधर हजार वर्षों से कूपमंडूक बने हुए हिन्दुओं के सिंघलद्वीप में जाकर विवाह संबंध करने का। दुनिया जानती है कि सिंघलद्वीप के लोग (तमिल और सिंघल दोनों) कैसे काले-कलूटे होते हैं। यहाँ पर पद्मावती स्त्रियों का पाया जाना गोरखपंथी साधुओं की कल्पना है।"[2] पद्मावत की ऐतिहासिकता पर कई प्रकार के सवाल उठाये गये हैं। अगर भंसाली यह कहते कि यह इतिहास नहीं है, बल्कि एक काल्पनिक कहानी है तो शायद किसी को कोई ऐतराज नहीं होता।

पद्मावतीको केंद्र में रख कर फिल्मों के अलावा कई धारावाहिक और डॉक्यूड्रामा भी बनाये जा चुके हैं। इनमें सबसे प्रमुख जवाहर लाल नेहरू की पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया (भारत एक खोज)' पर श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित डॉक्यूड्रामा जिसमेपद्मावती-रतनसेन और अलाउद्दीन खिलजी की कहानी का चित्रण किया गया है। इसके अलावा साल 2009 में सोनी टीवी पर 'चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का जौहर' नाम से धारावाहिक भी बन चुका है। यह धारावाहिक 6 महीने तक टीवी पर दिखाया गया था। इस धारावाहिक में भी रानी पद्मिनी-रतन सिंह का प्रेम दिखाया गया और खिलजी को एक खलनायक दिखाया गया था। दूरदर्शन पर भी इतिहास के गवाह के नाम से एक डॉक्यू-ड्रामा दिखाया गया था जिसमें चित्तौडगढ़ पर एक एपिसोड था।इन सभी माध्यमों सेपद्मावतीकी कहानी की प्रस्तुति हुई है जिनका विश्लेष्ण करने पर यह पता चलता है किपद्मावतीकी कथा उत्तरोत्तर बदलती गई और कई बार इन बदलाओं के कारण निर्माताओं को विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ा।

जायसी कीपद्मावतीऔरमीडियाकीपद्मावतीके माध्यम सेमीडियाके द्वारा 'उत्तर-सत्य' को गढ़ने का प्रयास किया गया। है। उत्तर-सत्य का सहारा लेकर 21वीं सदी के संचार माध्यमों ने नकली, झूठी खबरें, अफवाहे फैलाकर जिस प्रकार से एक अलग सत्य की स्थापना की है उसने सामाजिक स्वरूप को बदलने में बड़ी भूमिका निभाई है। घटिया पत्रकारिता औरमीडियाउद्योग में व्याप्त व्यवसायीकरण ने इस परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। पद्मावत की ऐतिहासिकता को देखते हुए, संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म 'पद्मावती' पर विरोध और विवाद कहीं-न-कहीं इतिहास और इतिहास के घालमेल के कारण हुआ । भंसाली की पद्मावत की ऐतिहासिकता के संदर्भ में राफिद हुसैन का मत है - "The retelling of the story has offered a new interpretation and perspective on the legend, which has been a subject of controversy and political debate. But this is not the first time *Padmavat* has been used to serve specific agendas. Throughout history, variations of the legend of Padmavat emerged at convenient times to suit the purposes of different polities, castes, and groups… In Bhansali's *Padmaavat,* there is a significant deviation from the source text of Malik Muhammad Jayasi by completely ignoring the history of internal conflicts among Rajput kings."[3] अत: कहा जा सकता है कि राजपूत घरानों में इस तरह से स्त्रियों को देखा जाता है जो अपनी अस्मिता और स्वाभिमान के कारण अपने आपको जौहर (मृत्यु) के हवाले कर देती हैं, तो उसका अपमान वे नहीं सह सकते थे। इस बात को लेकर विरोध प्रदर्शन भी हुआ हुआ।

निष्कर्षत: समय के साथ हर विधा के पठन-पाठन, दृश्यात्मकता और समय की गतिशीलता के साथ-साथ समाज और संस्कृति में भी प्रभाव उत्पन्न होता है। इन्हीं प्रभावों से रचना की मूल संरचना भी अछूती नहीं रह पाती। भारत में विविध प्रकार की जातियां, धर्म, संप्रदाय, और संस्कृतियाँ मौजूद होते हुए भी अपनी परंपरा का अनुसरण करती है, तो यह निश्चित है कि रचनाकार की रचना का रचना को देखते हुए पाठक भी अपनी-अपनी समझ के अनुसार अपने विचार प्रस्तुत करता हैं। इन विचारों के प्रस्तुतिकरण में कभी राजनैतिक ताकतों का, कभी धर्म के समूहों का, कभी राष्ट्रवादी संगठनों का हस्तक्षेप रहता है, जिसके कारण मूल कृति के रूपांतरण में अनावश्यक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। अत: जायसी की पद्मावत के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है जिसमें मीडिया की भूमिका भी बहुत हद तक नकारात्मक नज़र आती है।

संदर्भ

1. https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%85%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%93%E0%A4%B2
2. जायसी ग्रन्थावली, संपादक- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई-दिल्ली, संस्करण-2018, पृष्ठ सं.- 40
3. राफिद हुसैन, https://www.thedailystar.net/star-literature/news/padmavat-under-the-lens-history-politics-and-literature-3318376